unacademy

Hi Learners

Welcome to Unacademy

Target Audience

- UPPCS
- UPSC
- UPSSSC
- Lower PCS
- SSC

unacademy

पुस्तकें व उनके लेखक

प्राचीन भारत की समस्त पुस्तकें

2 से 3 प्रश्न बनते है यहां से

Part 2

UPSC UPPSC MPPSC

भारवि	**किरातार्जुनीयम**
स्वयंभूदेव	**पउपचरिउ**। स्वयंभूदेव अपभ्रंश भाषा के महान कवि थे।
मेन्था	**हेयग्रीववध**
सोमदेव सूरी	(i) **यशस्तिलकचम्पू** (जैन धर्म से संबंधित) (ii) **नीतिवाक्यमृत**– यह जैन आदर्शों के दृष्टिकोण से अर्थशास्त्र की विषयवस्तु की समीक्षा है।
सोमदेव	**कथासरितसागर**। इस पुस्तक की रचना कश्मीर नरेश अनन्त की रानी सूर्यवती के मनोरंजन के लिए की थी। इस पुस्तक को 11वीं शताब्दी के सामाजिक जीवन की विश्वकोश का दर्जा प्राप्त है। सोमदेव ने स्त्रियों की पतनोन्मुख सामाजिक स्थिति का विवरण दिया है।
पोन्न	**शांतिपुराण**। पंपा, पोन्ना एवं रन्ना **कन्नड़** काव्य के **तीन रत्न** माने जाते हैं। पोन्न की उपाधि **उभय-कवि-चक्रवर्ती** थी।
रन्न	**गदायुद्ध**
पंपा	**विक्रमार्जुनविजय** अथवा **भारत**। पम्प राष्ट्रकूटों के समय कन्नड़ साहित्य का सर्वश्रेष्ठ कवि था।
नन्नायै	**आन्ध्रशब्द चिन्तामणि**। यह तेलगु का प्रथम व्याकरण है। नन्नैया, तिक्कन्ना एवं एरप्रगड़ तेलगु काव्य के तीन रत्न थे।
बल्लालभट्ट	भोजप्रबन्ध
बुद्धिस्ट इंडिया	**रिज डेविड** की इस पुस्तक बुद्धयुगीन गणराज्यों 16 महाजनपदों का उल्लेख हुआ है।
हेमाद्रि	चतुवर्गचिन्तामणि
वामन (भामा)	काव्यालंकार
मम्मट	**काव्यप्रकाश**
अमोघवृत्त	सांकतायन
भर्त्तृहरि	नीतिशतक (तीन शतक)
वात्स्यायन	**न्यायभाष्य**
कुमारदास	**जानकीहरण**
भट्टीकवि[1]	**रावणवध**। यह रामकथा के साथ-साथ व्याकरण के सिद्धांतों को भी बतलाती है।
रविवर्मन कुलशेखर (त्रावणकोर शासक)	**प्रद्युम्नाभ्युदय**
चिन्तामणि भट्ट	**शुकसप्तति**
श्रीपाल	वैरोचनपराजय
माघ	**शिशुपालवध**
श्रीहर्ष	**(1) नैषधचरित (2) खण्डनखण्डखाद्य**– श्री हर्ष ने इसमें अद्वैतवाद का प्रतिपादन किया और न्याय के सिद्धान्त का खण्डन किया। गहड़वाल शासक विजयचन्द्र एवं जयचन्द्र की राजसभा में थे और कवि के साथ-साथ बड़े दार्शनिक भी थे। 'विजय प्रशस्ति' के लेखक श्रीहर्ष थे।

1. कुछ इतिहासकार भट्टी को भर्तहरि मानते हैं जो क्रमशः साधु, दरबारी, दार्शनिक एवं व्याकरणशास्त्री बना था।

संध्याकार नंदी	**रामचरित**। संध्याकर नंदी ने इस पुस्तक में स्वयं को **कलियुग का बाल्मीकि** कहा तथा रामायण एवं रामपाल राम के रूप में किया है। रामचरित एक श्लेष काव्य (द्विअर्थी) का उदाहरण है जिसमें रामायण एवं रामपाल की कथाएं साथ-साथ चलती है।
हेमचन्द्र	(i) **कुमारपालचरित** (द्वयाश्रयमहाकाव्य) (ii) **परिशिष्टपर्वन** (iii) **सिद्ध हेम** (व्याकरण ग्रन्थ) (iv) **त्रिषष्टि शलाकापुरुषचरित**। हेमचन्द्र गुजरात के चौलुक्य के शासक जयसिंह एवं कुमारपाल की सभा में निवास करते थे। हेमचन्द्र की उपाधि **कलिकालसर्वज्ञ** थी। कुमारपालचरित संस्कृत एवं प्राकृत दोनों भाषाओं में है जिसमें अनहिलवाड़ा के शासक कुमारपाल की कथा के माध्यम से व्याकरण के नियमों को स्पष्ट किया गया है।
जयसिंह सूरी	**कुमारपालचरित**
जयानक	**पृथ्वीराजविजय**
चन्दबरदाई	पृथ्वीराजरासो। इसे **हिन्दी साहित्य का प्रथम महाकाव्य** माना जाता है। यह ब्रजभाषा में लिखी गयी है। 'ब्रज' हिन्दी का ही एक रूप है।
भोज परमार	(i) राजमृगाँक (ii) सरस्वती कण्ठाभरण (iii) श्रृंगार प्रकाश (iv) चम्पूरामायण (v) कूर्मशतक (vi) युक्ति-कल्पतरु (vii) तत्व-परीक्षा
शोड्ढल	**उदयसुन्दरीकथा**
कृष्ण मिश्र	**प्रबोध चन्द्रोदय**। कृष्णमिश्र चंदेल शासक **कीर्तिवर्मन** के दरबार में थे। प्रबोध चन्द्रोदय का फारसी अनुवाद शाहजहां के समय मुंशी **बनवाली दास** ने **गुलजार-ए-हाल** नाम से किया।
जयदेव	**गीतगोविंद**। जयदेव बंगाल के शासक लक्ष्मणसेन के पांच रत्नों में एक थे।
राजशेखर	**भुवनकोश, हरविलास, बालरामायण, बालभारत** या **प्रचंड पाण्डव, काव्य मीमांशा, विद्धशालभंजिका**। राजशेखर ने **कर्पूर मंञ्जरी** या **राट्टक** प्राकृत भाषा में लिखा। राजशेखर कन्नौज के प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल के गुरु थे। बाद में राजशेखर कन्नौज छोड़कर त्रिपुरी में कलचुरी नरेश युवराज के यहाँ चले गये।

Like

Share

unacademy

Follow

Thanks for Watching

Rate

Review

Recommend